Shri Vishvanathashtaka Stotram

श्रीविश्वनाथाष्टकस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Shri Vishvanathashtaka Stotram

File name : vishvanAthAShTakastotram2.itx

Category : shiva, aShTaka, stotra

Location : doc_shiva

Author : Swami Umeshvaranand Tirth

Proofread by : Paresh Panditrao

Description/comments : Ganga Mahatmya And Stuti Ratnavali By Swami Umeshvaranand Tirth

Latest update : July 8, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

श्रीविश्वनाथाष्टकस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय भवरोग विनाशकाय
गङ्गातरङ्ग धवली कूलवासकायम् ।
ज्योतिर्मयाय शिवलिङ्ग प्रकाशकाय
काशीश्वराय सततं प्रणमामि तुभ्यम् ॥ १॥

विश्वं प्रकाश सततं सकलं प्रदाय
मोक्षैक धाम कृत दान सदा जनाय ।
आनन्द सिन्धु विलयाय सुविग्रहाय
विश्वेश्वराय सततं प्रणमामि तुभ्यम् ॥ २॥

वाराणसीपुरी निरन्तर सेविताय
गङ्गाधराय शशीखण्ड शुशोभिताय ।
व्यालाधिराज निजमौलिसुवेष्ठिताय
विश्वेश्वराय सततं प्रणमामि तुभ्यम् ॥ ३॥

श्रीकाशिकायां स्थित दिव्यलिङ्गं
प्रकाशते लोक हिताय नित्यम् ।
श्रीविश्वनाथस्तवनाम व्यापकं
भूताधिवासं प्रणमामि नित्यम् ॥ ४॥

नन्यादि मृङ्ग्यादि गणैसुसेवितं
देवादिमन्वादि जनैः सुपूजितम् ।
आनन्दकन्दं परमंसुमङ्गलं
श्रीविश्वनाथं प्रणमामिनित्यम् ॥ ५॥

कैवल्यनिर्माण सुशन्तिधामदं
ऐश्वर्यमानन्द सुधाप्रदम्प्रभुम् ।
श्रीशङ्करं सर्वजनैः सुवन्दितं
श्रीविश्वनाथं प्रणमामि नित्यम् ॥ ६॥

नाना विलासैः परिपूरितोऽपि
    सदाउदासीन सदाविरागी ।
त्वयैवदत्तं सकलं सुसम्पदं
    भुञ्जन्ति लोका प्रणमामि तुभ्यम् ॥ ७॥

महास्मशानेनिवसत् सदाशिवः
    जीवस्यस्थूलादि त्र्यंशरीरम् ।
करोति भस्मं स्वप्रदत्तज्ञानात्
    नमामिशम्भोतवपादयुग्मम् ॥ ८॥

इत्याष्टकं शङ्कर नाम शोभितं
    येयेपठन्तीह सदादिनेदिने ।
श्रीशम्भुभक्ति हृदयेभविष्यति
    श्रीविश्वनाथस्य सुदर्शनञ्च ॥ ९॥

इति श्री स्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थविरचितं शिवाष्टकं सम्पूर्णम् ।

जो परमेश्वर को पाता है वह अपने रूप में न रहकर प्रभु के रूप में समा जाता है । - “सन्तवाणी”
ईश्वर का स्मरण करो तो ऐसा कि फिर दूसरी बार उसे याद ही न करना पड़े । - “सन्तवाणी

Proofread by Paresh Panditrao

Shri Vishvanathashtaka Stotram
pdf was typeset on February 2, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*